

नाम जपुं नित्य तेरो तेरो...

- » प्रभु का नाम निक्षेप भावजिन के साथ अभेदभाव में आलम्बन होने से भाव की तरह पूर्य है। प्रभु के नाम स्मरण से जो रोमांच प्रगटता है, भावोल्लास बढ़ता है, उसका वर्णन शब्दातीत है, कोई समर्थ नहीं है।
- » प्रभु के नामस्मरण से मानो ऐसा लगता है कि साक्षात् परमात्मा हमारे सम्मुख उपस्थित हो, हमारे हृदय सिंहासन पर बिराजने के लिए प्रवेश कर रहे हो, उनसे मधुर संवाद चलता हो, सम्पूर्ण शरीर के प्रत्येक रक्त बूंद में समा गए हो, हृदय की हर धड़कन में, शरीर के रोम-रोम में परमात्मा का वास हो गया हो, सम्पूर्ण शरीरव्यापी हो गये हो, ऐसा दिव्य अनुभव होता है और आगे ऐसी भी अनुभूति होती है कि हमारे सर्व आत्मप्रदेश परमात्मायन बन गये हैं, परमात्मात्वस्वरूप बन गये हो, उस समय "मैं भी परमात्मा तुल्य हूँ", ऐसी अवर्णनीय अनुभूति होती है। "मैं परमात्मा ही हूँ", ऐसा प्रणिधानयोग प्राप्त होता है, फिर अंदर-बाहर सर्वत्र परमात्मा ही दिखते हैं, ऐसे तीव्र भावोल्लास से सर्वकल्याण की प्राप्ति होती है।
- » नाम निक्षेप आलम्बन रूप है, जो उपदेश की तरह हृदय में भावोल्लास प्रगट करता है। बाह्य निमित्तों के द्वारा निरालंबन अवस्था तक पहुँचा जाता है। अतः शुभ भावों को प्रगट करनेवाले नाम निक्षेप का निरंतर आसेवन करना चाहिये।
- » नामस्मरण, नाम जप करनेवाले का जुड़ाव अन्य सारे माध्यमों से हटकर एकमात्र परमात्मा से हो जाता है। जिससे वह परमात्मा में एकाकार हो जाता है। यह प्रभुमयता उन्हें प्रभु बना देती है। जैसे गौतम स्वामी, सुलसाजी, श्रेणिक महाराज का जीवन प्रभुमय था। लौकिक दृष्टांतों में भी हनुमान, शबरी, राधा आदि प्रसिद्ध हैं।

आधार : प्रतिमाशक्त

